हितकार ॥ टेर ॥ तीन भुवन के तुम हो नायक, ज्ञायकसकल प्रधान । अनंतचतुष्टय धारीस्वामी, तारण तरण जहान ॥ दुखहारी० ॥ १ ॥ शान्ति छवी सुखकारी श्री जिन, शान्ति परम दातार । शान्ति भाव से जो जन ध्यावें, पावें शान्ति अपार ॥ दुखहारी० ॥२॥ वीतराग सर्वज्ञ हितङ्कर शङ्कर शिव दातार । आवागमन दमन तुम करिये, अविचल सुख दातार ॥ दुखहारी० ॥३॥ कर्म्म शत्रु दुखदाई निशदिन, रचैं जाल भरपूर । चेतन को कर कैद जगत में, करैं मोक्षसे दूर दुखहारी० ॥४॥ धन्य घड़ी धन दिवस आज का आये तुम दरबार । 'बालक' की सुन अरज प्रभूजी, भवसागर से तार ॥ दुखहारी० ॥ ५ ॥

नं० ३ (बालक) की इच्छा गज़ल ।

तमन्ना दिलमें है येही, हमारी अब तरक्की हो ।

बजैं नकारे अरु नौबत, तरक्की हो तरक्की हो।
टेर—मुसल्मां हिन्दु ईसाई, न रक्खें द्वेष मनमांहीं
करैं सब कार्य मिलजुलकर, तरक्की हो तरक्की
हो ॥ १ ॥ कषाएं चार दुखदाई, क्रोध अरु
मानहैं भाई। कपट वा लोभको त्यागें, तरक्की
हो तरक्की हो॥ २ ॥ करैं जीवों पैं सब करुणा
जो चाहैं देश दुख हरना, भरें भंडार विद्याका,
तरक्की हो तरक्की हो ॥३॥ कला कौशल
जो भारतकी, उसे हमनेही गारतकी। जगावें
जोति विद्याकी तरक्की हो तरक्की हो ॥४॥
विदेशी रीतिको तजकर स्वदेशी प्रीति को
भजकर। करैं उद्धार हम अपना, तरक्की हो
तरक्की हो ॥५॥ पड़ा गफ़लत में यह भारत,

दस्तकारी विद्या, २ युरूपियन फ़ैशन,

हुवा तबहीसे गुण गारत । तजैं आलस्य दुख
दाई तरक्की हो तरक्की हो ॥ ६ ॥ पतित इस
देशको लखके, दयाकी वीर "अर्जुन" ने
गहैं उद्देश सब उनके, तरक्की हो तरक्की हो ७
करैं उद्योग शिक्षामें, समिती जैन जयपुरमें ।
सहाइ सब करैं उसकी ॥ तरक्की हो० ।८॥ मुरादें
दिलकी बर आवें, प्रभू ! से हम यही चाहैं ।
करैं हम देशकी सेवा तरक्कीहो तरक्की हो ९

---

१ उसूल, तत्व २ भारतवर्षीय जैन शिक्षा प्रचारक समिति इस नाम की जयपुर में एक संख्या है जिसके उद्देश बहुत उदार हैं । बिना जाति और मत भेद के सर्व जाति के बालक बालिकाओं को देश काल पात्रकी योग्यतानुसार हिन्दी, अङ्गेजी, व्याकरण, न्याय गणित, ड्राइँग भूगोलादि अनेक विषयों की आवश्यकीय उपयोगी शिक्षा देरही हैं विशेष हाल जानने के लिये, मन्त्री समिति से पत्र व्योहार कीजिये ।

नं० ४ हम क्या डूबे ? प्रत्यक्ष कारण ।

चाल-(महाराज माधोसिंहकी शोभा अपार है)

करनेसे घोरपाप जाति डूबी जाती है ॥ टेर ॥ जग जाति में यह धन्य है पर अब महा जघन्य है । निज धर्म कर्म त्याग हाय ! दुःख पाती है ॥ करनेसे ॥१॥ दयाधर्म धारणकरै जीवोंकी फिर हिंसाकरै । छोटीसी छोकरीकों यह बुड्ढों से व्याहती है (नन्हींसी जानके गलेखंजर चलाती है) करनेसे ॥२॥ बेटीको बेच दामले बुड्ढे का राम नामले । हाथों से करके खून मां मेंहदी रचाती है ॥ करने से० ॥ ३ ॥ नन्हींसी विधवा रोती है, रो रोके जान खोती है । ज़ालिम अरी ए कौम तू लहू उड़ाती है ॥ करनेसे० ॥४॥ बेटी तो

१ बहुत २ सतावे ३ परलोक पहुंचानेका शब्द

रोवे ज़ार ज़ार माता करे सोलह सिंगार । बरबाद करके बेटी को मां माल खाती है ॥ करनेसे० ॥५॥ बनबैठी कोम बेहया, हया शरम छोड़ी दया । निर्ल्लज हो समाज, खोटे काज करती है ॥ करनेसे० ॥६॥ बालक विवाह बुरा[1] कहा इसका भी निन्द्य फल लहा । बचपन में शादियां रचा, निर्बले[2] बनाती हैं ॥ करने से० ॥ ७ ॥ पढ़ने का काल बाल है, जीवन का माल ताल है । यह देखभालके भी तू जीते जलाती है ॥ करनेसे ०॥ ८ बच्चे की उम्र भोली है बिन कालिमा[3] वह धोली है । समझै जो भाई बहिन, उन्हें दम्पाति[4] बनाती है । करने से ॥९॥ बालक की देह निरोगहै, शादी इलाज -

१ बुरा २ कम ताक़त ३ बुराई ४ जोड़ा

रोग है। बिन जोगं भोग रोग का, बिष क्यों चखाती है॥ करनेसे॥१०॥ अनमेलके बिवाहों से अबलावोंके निस्सास से। नादारी कहतसाली, मारी, खाइ जाती है॥ करनेसे० ॥११॥ ऐ कौम! जो चाहे सुधार तो तज कुरीतिका प्रचार। 'बालक' की बात मानले, जो सौख्यं चाहती है॥ करनेसे॥ १२॥

नं० ५ जिनवाणी की प्रार्थना।

चाल (अम्मा मुझे गोटे की टोपी मंगादे)

माता मुझे चरणों का चेरा बनायले॥ टेर॥ तेरा शरणा लहूं, जग से तरणा चहूं। मुझे जामन मरण से छुडायदे॥ माता मुझे०॥१॥ तेरी भक्ती चहूं शिवनारी गहूं। मुझे अपनाही दरश दिखायदे॥माता मुझे०॥२॥ तेरे चरणन परूं तेरी भक्ती धरूं। माता 'बालक' की टेक निभायदे॥ माता मुझे॥ ३॥

---

१ लायक़ २ सुःख।

नं० ६ जीव प्रति उपदेश ।

चाल (लीजो लीजो खबरिया हमारीरे)

जिया भक्ती तू करले जिनवरकी। तेरी करनी सफल हो भव भव की॥टेर॥ करने सेघोर पाप आप आय नरक में पड़े। शीत ऊष्ण भूक प्यास रोगसे सहे॥जिया० ॥१॥ प्रपंच के रचे तिरयंच योनि को धरे। नाक कान को छिदा बन्धन में पड़ मरे॥ जिया० ॥२॥ शुभ कर्मके प्रसाद, स्वर्ग माहिं सुरहुवा। परके विभव को देख आप झूरता रहा॥ जिया ॥३॥ अति पुण्य के प्रभाव से, नर भव रतन लहा। विषयों के माहिं मत गवां तू मानले कहा॥जिया०॥ निज रूपको विचार के, नर भव सफल करो 'बालक' प्रभु की सीख धार, मुक्तिको बरो॥जिया

नं० ७ जागो चाल—(ठुमरी)

जागो! जागो!! जागो!!! भारतके

प्यारो, जागोरे जागो ॥ टेर ॥ हुवा भोर उन्नति का जगमें तुम क्यों सोवो प्यारोरे ॥ १ ॥ पड़े काहिली अरु सुस्ती में गुदड़े मसनद फाड़ोरे ॥ २ ॥ आलस त्याग गहो पुरुषारथ, उद्यमता तन धारोरे ॥३॥

नं० ८ जपो जिन माला ॥

चाल– (भर भर जाम पिला गुल लाला बनाके मतवाला)

कर कर ध्यान जपो जिनमाला, जगत से हो टाला । हो टाल टाला० ॥ कर कर ध्यान ॥टेर॥ जिन गुण अपार है, त्रिभुवन में सार है देवों के देव श्री जिनेन्द्र को प्रणाम है । हो टाला टाला, कर कर ध्यान० ॥१॥ नर जन्म सार है, मुक्ती का द्वार है । भोगों के बश में होय के होता क्यों ख्वार है, । होटाला० ॥ २ ॥ जिन को विचार है, यह जग असार है । (बालक)

वो धर्म्म धार कर हो जाते पार हैं॥ हो टाला ।३॥

नं० ९ किनका जन्म सफल है ?

चाल–(न छेड़ो हमें हम सताये हुए हैं)

जो जिन राज से प्रीति लाये हुये हैं, वो फल जिन्दगी का उठाये हुये हैं ॥ टेर ॥ निरखते जो मूरत परम बीतरागी, वो वैराग्यता दिलों लाये हुये हैं ॥ १ ॥ समझते हैं संसार को झूठा सपना, जे जिन देवसे नेह लगाये हुये हैं ॥ २ ॥ न यां पर खतर है न आगे कीडरहे । जो निज रूप में रूप लाये हुये हैं ।३॥ जिनेश्वर की भक्ती हो जिस दिलमें हरदम वहै मुक्ती की डिगरी लिखाये हुये हैं ॥ ४ ॥ मनुष जन्म पाना है मुश्किल सरासर । बिना ज्ञान बालक सताये हुये हैं ॥ ५ ॥

नं० १० मुनासिब है ? गजल ॥

दयामई धर्म्म है सच्चा, वही धरना मुनासिब है ।

जगत जंजाल में पड़कर न सोना अब मुनासिब है ॥ टेर ॥ जीव में जान अपनी सी, समझना ही मुनासिब है। सताना जीव का हरगिज़, नहीं हमको मुनासिब है ॥ दयामई ॥ १ ॥ बुरा है झूँठका भाषण, बताना ही मुनासिब है। सरल मीठे बचन सच्चे, उचारण ही मुनासिब है ॥ दयामई ॥ २ ॥ पराया द्रव्य विष्टा सम, देखना ही मुनासिब है। साथ में चोर ज्वारी के, न रहना ही मुनासिब है ॥ दयामई ॥ ३ ॥ पराई नार भगनीवत, लखना ही मुनासिब है। नरों नारी के फन्दे में, न पड़ना ही मुनासिब है ॥ दयामई ॥ ४ ॥ विषय पञ्चेन्द्रि के जो हैं, घटाना ही मुनासिब है। जरूरत अपनी के मुआफिक़, नियम करना मुनासिब है ॥ दयामई ॥ ५ ॥ धर्म्म का सार है यह ही, धर्म्म धरना

मुनासिब है। इसे घर स्वर्ग मुक्ती में, रमण करना मुनासिब है॥ दयामई ॥६॥ जगत जीवो जरा चेतो, चेतनाही मुनासिब है। कहै बाकल तुम्हारा दास, करनाही मुनासिब है ॥ दया०७॥

नं० ११ गाने योग्य गाली।

चाल—(गोरामुखपर काली चून्दरी)

म्हेतो आया शरण तिहारी प्रभुजी मोक्ष पठाओजी ॥ टेर ॥ प्रभु तुम सब जीवन हितकारी, तारण तरण विरद के धारी, हम पर मेहरकरा उपकारी, आवागमन मिटाओजी॥ म्हेता ॥ १ ॥ दुश्मन अष्टकरम दुखदाई, इन पर विजय आपने पाई। केवल ज्ञान लह्यो सुखदाई, सोही ज्ञान बताओजी॥ म्हेतो ॥२॥ हमतो मूढ़ महा अभिमानी, रम रहे विषयों में अज्ञानी। सुनियो विनती शिवसुखदानी

बेड़ा पार लगाओजी ॥ म्हेतो० ॥ ३ ॥ जीवन सफल भया हम आज, निरखी शान्ति छवी जिनराज । मेटो भव बन्धन के काज, 'बालक' बेग उबारोजी ॥ म्हेतो ॥ ४ ॥

॥ नं० १२ स्त्रियों को मुनासिब है। गज़ल ॥

सुनो तुम देशकी नारी, श्रवण करना मुनासिब है। हिताहित को समझ करके, समझनाही मुनासिब है ॥ टेर ॥ तुम्हारा धर्म्म पति-सेवा यही सेवा मुनासिब है। इसी सेवा ही का मेवा, सदा चखना मुनासिब है ॥ सुनो ॥ ॥१॥ लिया मानुष जनम तुमने, सफल करना मुनासिब है। ज्ञान के नूर से पुरनूर, रहनाही मुनासिब है ॥ सुनो० ॥ २ ॥ बुरे-व्यसनों से अपने को, बचानाही मुनासिब है ॥ शीलशृंगार तनको, सजानाही मुनासिब है ॥ सुनो ॥ ३ ॥

सती सीता हुई कैसी, वही बनना मुनासिब है
यही आदर्श तुमसबको सदा रखना मुनासिबहै
॥ सुनो० ॥ ४ ॥ क्रोध अरु लोभ वा माया,
मान तजना मुनासिब है ॥ पतिव्रत धर्म्म
का शरणा सदा धरना मुनासिब है॥ सुनो ॥
॥५॥ सुधारक हो जगतकी तुम सुधरनाही
मुनासिब है । तुम्हारे ज्ञान से भारत, चमकना
ही मुनासिब है ॥ सुनो० ॥ ६ ॥ जगत जननी
उठो जागो, जगानाही मुनासिब है । करो अब
महर (बालक) पर दया करना मुनासिब है ॥
सुनो० ॥ ७ ॥

नं० १३शिक्षित माता का पुत्री को उपदेश ।

चाल—(हो राजा राम की आरती कीजे)

आज भई मेरी बेटी पराई, सास ससुर घर जाना
होगा । सास ससुर परिजनकी सेवा, पतिपूजा

चितलोना होगा ॥ आज० ॥ धरम करम का
साधन निशिदिन नारीधर्म निभाना होगा॥२॥
पहिले उठना पीछे सोना दिनभर हाथ हिलाना
होगा ॥३॥ भोजन की विधि सोच समझकर
पानी छान बरतना होगा ॥ ४ ॥ लोभ मान
अरु माया ममता क्रोधकी आग बुझाना
होगा ॥ ५ ॥ कुल मर्यादा नाहिं बिसरना लाज
शरम मन भाना होगा ॥ ६ ॥ धन
दौलतका का गर्व गवांकर, अर्न धन दान दिल
ना होगा ॥ ७ ॥ वस्त्राभरण अरु गहना गांठ
इनका हठ नहिं करना होगा ॥ ८ ॥ आमद
से कम खरच उठाकर, दुःखनिवारण करना होगा
॥ ९ ॥ शील रतन को घटमें धरकर, पञ्च अणुव्रत धरना

---

१ कार्य में लाना, २ कुलकी रीति, ३ भूलना ४ नाज
द्रव्य गरीबों को दैन दिलाना ॥

होगा ॥१०॥ क्रोधित होय पती जो कदाचित्, भाव विनीत बताना होगा ॥ ११ ॥ विद्यापढ़ करे निज हितकरना, देव, धरम, गुरु लखना होगा ॥ १२ ॥ धर्म नारि का अन्थनमें जो, ताहीघर शिवै पाना होगा १३॥ 'बालक" की शिक्षा मन धरकर, घर घर मङ्गल गाना होगा ॥१४॥

नं० १४ हे जीव क्या करना ।
चाल (दया करनेमें दिलको लगाना ।

जिनवर भक्तिमें दिलको लगाना।हा हा बिसर्नां न मेर जिया ॥टेर॥ मिथ्या भरमको दिल से हटावो।हौवे भला, जगमें सदा। वरना भवर में होगा गु जरना ॥ जिनवर ॥१॥ सम्यग्दर्शन

---

१ हिंसा, चोरी, झूठ, कुशीलका त्याग और परिग्रह परमाण २ नवना ३ कल्याण, मोक्ष ।

ज्ञान चारितको, धरो सदा दिलमे जचा ।नाहीं संसार में होगा भ्रमना ॥ जिनवर ॥२॥ छहों कायकी करुणा धारो पालो दया घटमें जियो। भाई सब जीवोंको समझो समाना ॥जिनवर ०३। अष्ट करमको तपकर जारो, गावो सदा, जिन गुण भला । "बालक" शिवनारीको होय बरना जिनवर ॥ ४॥

नं० १५ जिनवर को अरजी।

चाल (तरकारी लेलो मालन तो आई)

जिनराजा स्वामी अरज हमारी सुन तारिये ॥ टेर ॥ दीनदयाल दयाके सागर, सब जीवन उपकारी । भवसागर से बेग उबारो जग तारक जस धारी । जी जिन० ॥१॥ चतुर्गति में भ्रमते भमते, अगणित दुख हम पाये । तारण तरण विरद हम सुनकर, शरण तिहारी आये

आयेजी ॥ कर्म शत्रुके फन्दे पड़कर, चेतन हुवा अनार। विषयों में मद मस्त होय कर दर दर बना भिखारीजी ॥ जिन ॥ ३ ॥ शैली 'अमोलक' बुद्धवारकी तव गुण निशदिन गावै। पूजन भजन करे भक्तीसों, मुक्ति अमोलक पावेजी ॥ जिन० ॥४॥ सत्गुरुसीख सुनी "बालक" ने, शरण तिहारी धारी। ज्ञान भानु उदय करो अब, गावे गुण सुखकारीजी ॥ जिन० ॥ ५ ॥

१६ चाल—गीत—(खिलारी ढोला)

जिनवर भगवान जस धारीरे अरे हांरे जग तारी रे, दुखहारी, सुखकारीरे) सुज्ञानी जियरा ॥ टेर ॥ श्री जिन नायक शिव सुख दायक, ज्ञायक सकल प्रधान। जग जन तारक जग हितकारक, जानत तीन जहान ॥ जस

धारीरे ॥ १ ॥ जैन धरम जियका उपकारी, तीन जगत सरताज। जीवों को जग डूबत तारै, जय जय जय जिनराज ॥ जसधारी ॥२॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तिहारा, लिया कर्म सब लूट। निधन रङ्क बने तुम डोलो भाग्य गये हैं फूट॥ जस० ॥ ३ ॥ करम नचावें नाच चतुर्गति लख चौरासी मांहि। नित नित नूतन बन्ध बढ़ावें, जो जिन सुमिरै नांहि ॥जस० ४॥ चार कषाय पंच इन्द्रीने, किया बहुत बेहाल। सच्चे सुख की सुध बुध भूला पड़ा काल के गाल॥ जस ॥५॥ दुर्लभ नर भव पाकर चेतन चित में ज्ञान विचार। "तू" है कौन ? कौन है तेरा ? कौन उतारे पार॥ जस० ॥६॥ आठ पहर की चौसठ घड़ियां बेगी बीती जांय। करना हो सो करले ज्ञानी, नहिं पाछे पछताय.

जस० ॥७॥ शुद्ध भावसे निश दिन 'बालक' जपो सदा जिन नाम। जगतजाल जंजाल जान्कर, जा देखो शिव धाम ॥ जस ॥ ८ ॥

न० १७ वियोग संगीत

चाल–ठुमरी (होरी सखी बिजरी को देखे जिया तरसे)

हेरी सखी गिरवर जिनवर जावत ॥ टेर॥ कहां करूं कछु बनि न परत है, जिय मोरा दुख पावत ॥ हेरी सखी० ॥ १ ॥ पशुवन की करुणा उर धरकर, मुझपर जोर जनावत ॥ हेरी सखी ॥ २ ॥ "बालक, प्रीति रीति यह उत्तम नेमि राजुल मन भावत । हेरी सखी ॥३॥

नं० १८ वियोग सङ्गीत (नम्बर २) बड़ी बहर ।

हेरी सखी! जिन बिन जियादुख पावे ॥ ॥ टेर ॥ नैनन नीर रहै निसि बासर, नेमिपिया नहिं आये ॥ हेरीसखी० ॥ १ ॥ मात पिता स्वारथ के साथी, झूँठी प्रीति जनावैं ॥ हेरी ॥२॥

जग लीला जानी अब ज्ञानी, बिजरी सम न सजावे ॥ हेरी ॥ ३ ॥ 'बालक, कौन हमारा प्यारा, जिनसों जाय मिलावै ॥ हेरी० ॥ ४ ॥

नं० १९ चाल (मजतरिब क्यो दिले बेकरार है)

प्रभुजी से अरज़ बार बार है। क्या करोगे मेहर मुझपै मेरे प्रभू ?॥ टेक ॥ जिनवर हमारा, करदे किनारा। भव से तिराके लगादे तू पार। मेरी नय्या पड़ी है प्रभु बीच धार। जो ली शरण तेरी हुये भवसे पार। दिलसे "बालक, बना तावेदार है ॥ हां प्रभुजीसे ॥ १ ॥

नं० २० जिनवर की जय ॥

चाल (दो फूल जानी लेलो)

जिनवरकी जय सब बोलो ! बोलो जी बोलो बोलो ॥ टेर ॥ जिन देव महा उपकारी सब जीवन के हितकारी। तज चरण शरण मत डोलो ॥ जिनवर की जय० ॥ १ ॥ प्रभु

बीतराग पद धारी, सर्वज्ञ हितैषी भारी। लखि मूरत मन से बोलो। जिनवरकी जय० ॥२॥ जिन राज सकल गुण भूषित, नहिं आन देव सम दूषित। ले सत्य तराजू तोलो॥ जिनवरकी० ॥३॥ अरहन्त सुजस सब गावें इन्द्रादिक शीस नवावैं। बालक, निज घुण्डी खोलो, जिनवर की जय ॥ ४ ॥

न० २१ वियाग सगीत न० ३

चाल (मोहनियां प्यारी सर्नम से मिलाओ)

सांवरिया तोरी सूर अब दिखावो। जो जावो तो आवो ज़रा मिलते जावो। सबमें आला, तुमहो लाला काहे टाला खावो। मैं खड़ीहूं दरश में तुम और न दोष लगवो, सूरत अब दिखाओ ॥ टेर ॥ जनम नो गुण गाये. जिन जी सदा मैं तेरे। आप की शरण मोरा जियरा। लेकेलार तुम बनको मुभको

जावो बिनदोषरोप ना सनम सतावोजी ॥ तजके प्रीति यों नहीं आप गिरनार पठावोजी । तोरी शरण हम 'बालक, जगत से उबारो ॥ १ ॥

नं० २२ चाल-(थारी नाहीरे भरोसा, सईयां आवोगे के ना)

जिनवर तुमरोही भरोसा, मोहे तारोगे के नाहिं । तारोगे के नाहिं मोहे तारोगे के नाहिं । जिनवर ॥ टेर ॥ तुमसा दीनदयाल और नहि मुझको पासी । मुझसा दीन अनाथ, नाथनहितुमकोपासी । जिनवर तुमरोही भरोसा ॥१॥ जग जन तारनहार हरो मेरी भव पासी तुम बिन सत् उपदेशरूप अमृतको पासी ॥ जिनवर तुमरोही भरोसा ॥ २ ॥ करुणाकर जिनराज जगत से करो खलासी । 'बालक' तुम गुणगाय जनम निज सफल मनासी ॥ जिनवर तुमरोही भरोसा ॥ ३ ॥ इति